Peer Reviewed/ Refereed Journal
ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157
Received on 23th August 2019, Revised on 18th Sept. 2019; Accepted 23th Sept. 2019

शोध–पत्र

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के लोक शिक्षण प्रतिष्ठान द्वारासंचालित कम्यूनिटी सेंटर्स का अध्ययन

*शीला शर्मा, *पी.एच.डी. स्कोलर*
डॉ. अर्पणा श्रीवास्तव, *सहायक आचार्य*
लो.मा.ति.शि.प्र.म. डबोक (सी.टी.ई) उदयपुर

मुख्य शब्द– *मान्यताएँ, अंधविश्वास, कुरीति, सामाजिक बुराई, बाल विवाह, मृत्युभोज, मद्यपान, धम्रपान आदि।*

प्रस्तावना

राजस्थान विद्यापीठ की स्थापना 21 अगस्त 1937 को मनीषी पण्ड़ित श्री जनार्दन राय नागर द्वारा की गई थी। उनका मूल उद्देश्य उदयपुर संभाग की दूरदराज की आदिवासी क्षेत्र की जनता में शिक्षा का प्रचार – प्रसार करना और देश की मुख्य धारा से जोड़। समाज में प्रचलित मान्यताएँ एवं अंधविश्वासों, कुरीतियों, सामाजिक बुराईयाँ जैसे बाल विवाह, मृत्युभोज, मद्यपान, धम्रपान आदि के विरूद्ध जनता को जागरूक करना एवं चेतना उत्पन्न करना था।

अतः इन सभी प्रयासों को सफल बनाने हेतु गावों में कम्यूनिटी सेंटर्स का गठन किया गया तथा ग्रामीण महिला, पुरूषों एवं बच्चों को उनसे जोड़कर उनके समाजिक शैक्षिक, आर्थिक, बौद्धिक, राजनैतिक विकास हेतु अथक प्रयास किया जा रहा है इसी संदर्भ में यह शोध कार्य शोधकर्त्री ने प्रारम्भिक खोज कर उक्त समस्या शीर्षक का चयन किया। शोध शीर्षक ***"जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के लोक शिक्षण प्रतिश्ठान द्वारा संचालित कम्यूनिटी सेंटर्स का अध्ययन।"*** के निमित अध्ययन किया गया।

कम्युनिटी सेंटर्स का अर्थ :– कम्यूनिटी सेंटर्स से तात्पर्य एक गैर सरकारी संगठन से जो कि रजिस्ट्रार संस्थाएँ, राजस्थान जयपुर के रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 28198 अन्तर्गत पंजीकृत संस्था है कि जिसका कार्य है विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का संचालन एवं समाज में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना जाग्रत करना तथा आदिवासियों के उत्थान हेतु कार्य करना। अतः इस कार्य को गति देने हेतु जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ ने जन शिक्षा व प्रचार प्रसार हेतु उदयपुर जिले में कार्य प्रारम्भ किया ।

ऐतिहासिक पृश्ठभूमि :– कम्यूनिटी सेंटर्स विभाग मनीशी पण्ड़ित जनार्दन राय नागर द्वारा वर्ष 1937 में स्थापित तथा सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1958 अन्तर्गत विधिवत् रूप से पंजीकृत देश की प्रमुख एवं अग्रेजी स्वंयसेवी शिक्षण संस्था राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर (लोकमान्य विश्वविद्यालय) में एक विभाग लोक शिक्षण प्रतिष्ठान का एक अनुभाग है।

स्थापना

इस विभाग की स्थापना जुलाई सन् 1953 में प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की विशेष योजना संख्या–1 के अन्तर्गत की गई। वर्तमान में यह विभाग राजस्थान सरकार के प्राथमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर के अन्तर्गत विशिष्ट स्तर की संस्था के रूप में संयमित हो रहा है। राज्य सरकार द्वारा स्थाई रूप से मान्यता प्राप्त विभाग को सरकार से मान्य व्यय पर 90 प्रतिशत अनुदान सहायता प्राप्त होती है।

विभाग की स्थापना के मुख्य उद्देश्य

जिले के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में साक्षरता प्रसार कार्य को गति देना, सतत् शिक्षा के माध्यम से नवसाक्षरों को प्रेरित कर शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना।

- शिक्षा से वंचित एवं विद्यालय नहीं जाने वाले 6 से 14 वर्श की आयु वर्ग के बालक–बालिकाओं हेतु विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था करना।
- ग्रामीणों में जन चेतना जाग्रत करना, समाज मे व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों के प्रति सजग करना एवं जनतांत्रिक आधार पर इनके समाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन का विकास एवं निर्माण करना।

- महिलाओं और बालिकाओं को शिक्षित करना, स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करना, सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करना।
- पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने हेतु जन मानस तैयार करना।
- महिलाओं को स्वंय सहायता समूह के माध्यम सें अल्प बचत के लिए प्ररित करना एवं स्वरोजगार से जोड़ना।
- शिक्षित बेरोजगार युवाओं को विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से रोजगार से जोड़ना।

विभाग के कार्य क्षेत्र

वर्तमान में विभाग का कार्य क्षेत्र उदयपुर जिले की गिर्वा एवं बड़गांव पंचायत समिति क्षेत्र तथा बासवाड़ा जिले की घाटोल समिति क्षेत्र है। पाँच मुख्य सामुदायिक केन्द्रों के अतिरिक्त 12 उपकेन्द्र एवं निराश्रित बाल कल्याण ग्रह एवं 6 बाल श्रमिक विद्यालय संचालित है।

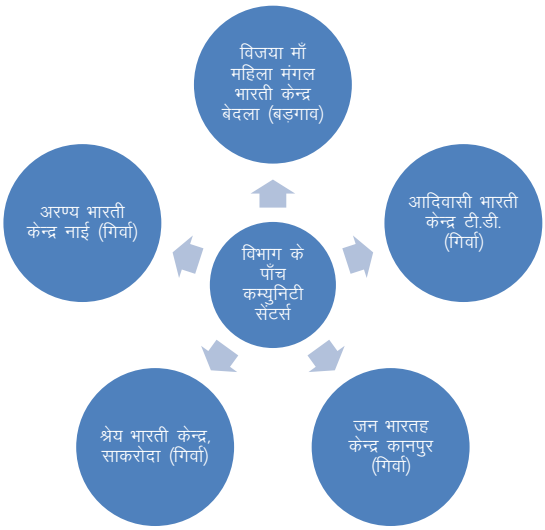

उपरोक्त पाँचों केन्द्रों तथा इससे जुड़े अन्य उपकेन्द्रो पर संचालित गतिविधियों एवं योग्यताओं के द्वारा लाभ प्राप्त करने वाले लाभार्थियों के बारे में अब तक कोई शोध कार्य नही किया गया है अतः विषय की उपयोगिता एवं शोध कार्य की आवश्यकता अनुभव करके शोधकर्ता ने ***"जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के लोक शिक्षण प्रतिष्ठान द्वारा संचालित कम्युनिटी सेंटर्स का अध्ययन।"*** शीर्षक पर शोध कार्य करने का निर्णय लेकर उसे सम्पादित किया।

शोध समस्या कथन

'जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के लोक शिक्षण प्रतिष्ठान द्वारा संचालित कम्यूनिटी सेंटर्स का अध्ययन' के निमित अध्ययन किया गया।

समस्या का औचित्य

शोध समस्या का प्रमुख औचित्य निम्नलिखित दृष्टिकोणों से है –

शैक्षिक संस्थाओं एवं योजनाओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण

प्रस्तुत शोध कार्य शैक्षिक संस्थाओं एवं योजनाओं की दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण है क्योंकि इस शोध कार्य के करने से कम्यूनिटी सेंटर्स की स्थापना, उद्देश्य, कार्यक्षेत्र एवं महत्व, इसके द्वारा संचालित गतिविधियों एवं योजनाओं के बारें में संस्थाओं एवं अन्य शिक्षण केन्द्रों को जानकारी प्राप्त होगी।

समुदाय की दृष्टि से महत्वपूर्ण

प्रस्तुत शोध कार्य समुदाय की दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि समुदाय के लोगों को जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ् लोक शिक्षण प्रतिश्ठान एवं कम्यूनिटी सेंटर्स की संगठन, स्थापना, संकल्पना, आवश्यकता, गतिविधियाँ आदि की जानकारी प्राप्त होगी तथा समुदाय के लोगों में इससे जागरूकता, चेतना का प्रचार–प्रसार होगा।

छात्रों की दृष्टि से महत्वपूर्ण

प्रस्तुत शोध कार्य छात्रों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि छात्र कम्यूनिटी सेंटर्स द्वारा संचालित बाल मंदिर, बाल सभाऐं, बाल पंचायतें, बाल निराश्रित ग्रह, बाल श्रमिक विद्यालय आदि की गतिविधियों एवं सुविधाओं जैसे वाचनालय, श्यामपट्ट लेखन कार्य, नारा लेखन, आदर्श वाक्य लेखन, रैली, नुक्कड नाटक, प्रभात फैरी, आदि कार्यक्रमों के बारें में अवगत हो सकेगें।

महिलाओं एवं बालिकाओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण

प्रस्तुत शोध कार्य महिलाओं की शिक्षा, स्वस्थ्य, रोजगार आदि पक्षों को मजबूत व सुदृढ़ करने हेतु महत्वपूर्ण है। क्योंकि मण्ड़ल बालिका समूह, स्वंय सहायता समूह आदि संचालित होते हैं। जिससे महिलाओं को नई–नई योजनाओं की जानकारी मिलती है।

लोक शिक्षण प्रतिष्ठान के पदाधिकारियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण

प्रस्तुत शोध के पदाधिकारियों को कम्यूनिटी सेंटर्स की गतिविधियाँ, कार्यक्रमों द्वारा प्राप्त लाभ के लाभार्थियों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी तथा तीन वर्षों में उनका स्तर कितना बढ़ा है उसके बारें में जानकारी प्राप्त होगी।

संगठन के पदाधिकारियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण

संगठन या समूह पदाधिकारियों जैसे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, अन्य कार्यकर्ताओं को शोध द्वारा सामुदायिक केन्द्र की स्थिति के बारें में जानकारी प्राप्त होगी तथा कम्यूनिटी सेंटर्स से जुड़ी महिलाओं को कितना लाभ मिल रहा है तथा भविष्य में केन्द्र द्वारा किस गतिविधियों की आवश्यकता है इसका निर्णय करने में भी शोध रिपोर्ट सहायक होगी।

व्यावसायिक एवं प्राविधिक दृष्टि से महत्वपूर्ण

प्रस्तुत शोध कार्य में समुदाय एवं संस्था को ज्ञान प्राप्त होगा कि कम्यूनिटी सेंटर्स द्वारा रोजगार प्रशिक्षण (सिलाई, ब्यूटी पार्लर, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, गीत–संगीत प्रशिक्षण) इत्यदि में दक्षता प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर व स्वावलम्बी बनाया जाता है।

नवीन शोधकर्ताओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण

प्रस्तुत शोध कार्य से यह जानकारी मिलती है कि किस–किस क्षेत्रों एवं विषय पर शोध कार्य पूर्णतः निष्कर्ष तक पहँचा है और भविष्य में किस विषय या समस्या पर शोध की सम्भावनाएँ उत्पन्न होगी।

शोध के उद्देश्य

- कम्यूनिटी सेंटर्स की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि उद्भव एवं विकास यात्रा का अध्ययन।
- कम्यूनिटी सेंटर्स की कार्य प्रणाली का अध्ययन करना।
- कम्यूनिटी सेंटर्स के शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार अन्य सेवाओं एवं कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहें समुदाय सदस्यों की विगत तीन वर्षों की जानकारी प्राप्त करना।

समस्या की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध शीर्षक के निमित निम्नलिखित शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया –

- कम्यूनिटी सेंटर्स के महिला लाभार्थियों के संबंध में प्रस्तुत मतों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- कम्यूनिटी सेंटर्स के प्रयासों द्वारा पुरूष लाभार्थियों के संबंध में प्रस्तुत मतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कम्यूनिटी सेंटर्स के प्रयासों द्वारा (बालकों एवं बालिकाओं) बाल लाभार्थियों के संबंध में प्रस्तुत मतों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- कम्यूनिटी सेंटर्स के ग्रामीण समुदाय लाभार्थियों के संबंध में प्रस्तुत मतों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

समस्या का परिसीमन

शोध कार्य की समय भाक्ति एवं साधनों की सीमाओं को देखते हुए शोध कार्य किया जाता हे जिससे समस्या का परिसीमन अवश्य हो जाता है। इस अध्ययन में जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के लोक शिक्षण प्रतिष्ठान द्वारा संचालित पाँचों सामुदायिक केन्द्र (कम्यूनिटी सेंटर्स) जो गिर्वा, बडगाँव, भीण्डर, गोगुंदा पंचायत समिति तक सीमित है। वर्तमान में 5 कम्यूनिटी सेंटर्स एवं 10 उपकेन्द्र कम्यूनिटी सेंटर्स विभाग द्वारा संचालित है। जिसमें कम्यूनिटी सेंटर्स प्रयास प्रमापनी हेतु 140 लाभार्थियों को सम्मिलित किया है।

न्यादर्श

अनुसंधान कार्य की विश्वसनीयता व सफलता न्यादर्श पर ही आधारित होती है। न्यादर्श का उपयुक्त चयन अनुसंधित्सु के लिए आवश्यक है। न्यादर्श के चयन से समय शक्ति व धन की बचत होती है तथा जैसा न्यादर्श होगा वैसा ही परिणाम हमारे सामने आएगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्ता ने कम्यूनिटी सेंटर्स के अध्ययन हेतु यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया इसमें कम्यूनिटी सेंटर्स द्वारा संचालित गतिविधियों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले 140 लाभार्थियों का चयन किया जाएगा।

उपकरण

इस शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मिति उपकरण का प्रयोग किया है।

- कम्यूनिटी सेंटर्स प्रयास प्रमापनी
- लाभार्थी जाँच सूची

शोध विधि

लघुशोध में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

विश्लेषण

क्र.स.	क्षेत्र	प्रतिशत
1	भौतिक संसाधनों संबंधी समस्याओं	50
2	आर्थिक समस्याएँ	60
3	मानवीय समस्याएँ	70

शोधकर्ता द्वारा पाँचों केन्द्रो का निरीक्षण किया गया तथा उनमें कार्यरत कार्यकर्ता एवं उनसे जुड़े स्वंय सहायता समूहों के सदस्यों से बातचीत हुई उनसे पाया गया कि **जन श्रेय भारती केन्द्र** साकरोदा का भवन, कक्षाकक्ष ,उपकरण आदि सुसज्जित व व्यवस्थित है लेकिन *Field Work* करने के लिए एक Personal Laptop की आवश्यकता हैं इससे कार्य करने में अधिक गति मिलेगी क्योंकि बस में जाने पर समय अधिक खर्च होता है तथा समय पर पहँच पाना मुश्किल होता है कुराबड़ मार्ग पर नाई मार्ग पर परिवहन साधन सीमित है। हर समय वहाँ परिवहन की सुविधा नहीं मिलती है।

ब्यूटी पार्लर कोर्स चलाने वाले प्रशिक्षणर्थियों से चर्चा करने पर पाया गया कि उसके लिए उचित कक्षा–कक्ष की कमी है वह पार्लर को व्यवस्थिति तरीके से चलाने में परेशानी आती है उनके पास टेबल, चेयर, अलमारी की अभाव है ब्यूटी पार्लर कीट एक बक्से में भर कर रखा हुआ है तथा छोटे से कक्षा में 15 महिलाएँ बैठ कर प्रशिक्षण ले रही है।

अरण्य भारती केन्द्र नाई में लाइब्रेरी के लिए अलमारी नही है पुस्तकालय की पुस्तकें एक टेबल पर रखी हुई है अतः पुस्तकालय की व्यवस्था में सुधार करने की आवश्यकता है तथा एक वाटर कूलर हो तो ट्यूबेल से पानी को फिल्टर करके फिर प्रशिक्षणार्थियों को पिलाया जाए ताकि उनके स्वास्थ्य पर बुरा बसर न पड़ें।

आर्थिक सामस्याएँ

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए धन की आवश्यकता होती है अतः धन का अभाव आर्थिक संकट उत्पन्न करता है। इससे प्रगति में बाधाएँ उत्पन्न होती है। हमारा लक्ष्य निर्धारित होते हुए भी हम उस तक पहुँच नहीं पाते क्योंकि जन–धन के अभाव में कोई भी कार्य पूर्ण करना असंभव है। इसी कारण कम्यूनिटी सेंटर्स द्वारार चलाए जा रहे गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को गति प्रदान करने हेतु संस्था प्रयासरत है। संस्था व विभाग के सहयोग से ही कम्यूनिटी को रोजगार एवं प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वालम्बी व आत्मनिर्भर बनाया जा राहा है। फर्डिंग एजेसी जैसे सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग 90 प्रतिशत निराश्रित बच्चों के लिए व्यय कर रहा है। इसी प्रकार कौनसी संस्था सिलाई प्रशिक्षण एवं रोजगार द्वारा महिलाओं को रोजगार प्रदान कर रहा है लेकिन जहाँ इस प्रकार की संस्थाएँ मदद नही करती है वहाँ की आर्थिक पक्ष कमजोर होने सें वह कार्यक्रम को चलाने में असमर्थ रहते है। अतः इसके लिए संस्था पर नई–नई एजेसिंयों से सर्म्पक कर उनसे परियोजना प्रारम्भ की जा सकती है।

वर्तमान में उमरड़ा में 3 वर्षों से बालश्रमिक विद्यालय बंद पडा तथा नाई में पहले बालमंदिर एवं निराश्रित बालग्रह चलता था जो कि धन अभाव के कारण के कारण वर्तमान में बंद पड़ा है।

इसके अलावा कार्यकताओं को समय–समय पर संस्था की ओर से प्रशिक्षण करने की आवश्यकता उन्हें नई–नई जानकारियों व परियोजनाओं से अवगत कराने की आवश्यकता है क्योंकि कार्यकर्ता स्वयं जागरूक होगा, तभी वह कम्यूनिटी को जागरूक कर सकेगा।

मानवीय समस्याएँ

भौतिक एवं आर्थिक समस्याँ के अलावा मानवीय संसाधन की बहुत महत्व है क्योंकि कार्यकर्ता का आपसी तालमेल सही नही होगा तो भी कार्य बाधित होगा उन्हें आपस में प्रेम सहयोग स रहकर कार्य करने के स्थान पर ईर्ष्या, द्वेष की भावना तथा कार्य को सही समय करने में कठिनाई उत्पन्न होगी अतः संस्था के कार्यकर्ताओं को एक परिवार के रूप में रहना चाहिए आपस में मिलजुल कर कार्य करने से कार्य सरल एपवं जल्दी हो जाता है उसके परिणाम हमारें पक्ष में होते क्योंकि अच्छी प्रणाली ही संस्था हो या व्यक्ति प्रगति के मार्ग को प्रशस्त करती है। अतः इसका सारांश रूप इस प्रकार है –

1. कमजोर आर्थिक स्थिति
2. आपसी सहयोग में कमी
3. कार्य के प्रति रूचि का अभाव
4. बेमेल कार्य विभाजन
5. कमजोर प्रजातान्त्रिक प्रबंध व्यवस्था
6. स्वार्थ एवं उपेक्षावृति
7. प्रबंध व्यवस्था में चुस्ती एवं कुशलता में कमी
8. कक्षा–कक्षों की कमी
9. पुस्तकालय का अभाव
10. प्रशिक्षणर्थियों के सहयोग की कमी
11. भवन की मरम्मत व रंग रोगन की कमी।

परिकल्पना आधारित निष्कर्ष

- कम्यूनिटी सेंटर्स की महिला लाभार्थियों के मतों से यह ज्ञात होता है कि इन सेंटर्स के द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जाता है जिससे उनके जीवन के आर्थिक में स्तर में सुधार आया है।
- कम्यूनिटी सेंटर्स के पुरूश लाभार्थियों के मतों से यह ज्ञात होता है कि इन सेंटर्स के द्वारा रोजगार के नये अवसर सृजित किये गये जिनसे रोजगार को बढ़ाव मिला है।
- कम्यूनिटी सेंटर्स के (बालकों–बालिकाओं) लाभार्थियों के मतों से यह ज्ञात होता है कि इन सेंटर्स के द्वारा रोजगार–उन्मुख प्रशिक्षण दिया जाता है जैसे कम्यूटर प्रशिक्षण, ब्यूटी पार्लर इत्यादि।
- कम्यूनिटी सेंटर्स की ग्रामीण समुदाय लाभार्थियों के मतों से यह ज्ञात होता है कि इन कम्यूनिटी सेंटर्स द्वारा समय–समय पर गाँव में चौपाल का आयोजन किया जाता जहाँ गाँव की समस्याओं पर चर्चा की जाती है।

*** Corresponding Author:**
शीला शर्मा, *पी.एच.डी. स्कोलर*
डॉ. अर्पणा श्रीवास्तव, *सहायक आचार्य*
लो.मा.ति.शि.प्र.म. डबोक (सी.टी.ई) उदयपुर